International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 8; August 2016; Page No. 61-68

स्वच्छ भारत अभियान का विकास खण्ड स्तरीय आलोचनात्मक विश्लेशण

(विकास खण्ड बहेड़ी जनपद बरेली उत्तर प्रदेश के विशेश संदर्भ में)

[1] डा0 मोहम्मद इसरार खाँ, [2] राजपाल

[1] सहायक प्रोफेसर, व्यवहारिक एवं क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर, प्रदेश, भारत।
[2] शोध छात्र, व्यवहारिक एवं क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

सरांश
वर्तमान शोधपत्र में शोधकर्ता द्वारा भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे "स्वच्छ भारत अभियान" का सूक्ष्म एवं समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है तथा स्वच्छ भारत अभियान की प्रकृति, प्रगति एवं जनस्वभाव तथा जन सहयोग जैसे वस्तुनिश्ठ चरों का मूल्यांकन किया गया है। इस योजना के माध्यम से किए जाने वाले कार्यों जैसे शौचालयों का निर्माण, साफ–सफाई, श्रमदान आदि का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। गरीबी के कारण उनके घर, पशुशाला, पीने का पानी, नाली, रास्ता, रसोईघर आदि के अभाव के कारण उन पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है।
इस योजना के प्रति सरकारी जागरुकता तथा व्यवहारिक समस्याओं की समीक्षा की गई है। लाभार्थियों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर स्वच्छ भारत अभियान की कार्यप्रणाली तथा सम्पादन का अध्ययन करते हुए पाया गया है कि स्वच्छ भारत अभियान ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोकप्रिय हो रहा है किन्तु सरकारी मशीनरी के कारण अकर्मण्यता तथा भ्रश्टाचार तथा जन सामान्य में प्रचलित धारणाओं एवं आदतों के कारण यह कार्यक्रम अभी भी परिणाम नहीं दे पा रहा।

मूलशब्दः स्वच्छता, स्वच्छता अभियान, शौचालय, जल प्रबन्धन, ग्रामीण स्वच्छता।

1. प्रस्तावना
"स्वच्छ भारत अभियान" एक अति महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक योजना है जो भारत सरकार द्वारा चलायी गयी है इस योजना को भारत सरकार ने 02 अक्टूबर 2014 से चलाया है। इससे पहले यह योजना अन्य नामों से चलायी जा रही थी, जैसे "केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम" 1986, "निर्मल भारत अभियान" 2012।
इस योजना के द्वारा लोगों को साफ–सुथरा वातावरण तथा खुले में शौच से मुक्त कराना है क्योंकि गन्दे वातावरण व खुले में शौच के कारण लोगों में बहुत भयंकर बीमारियों जैसे हैजा, चेंचक, डायरिया, पीलिया, आदि का होने का डर बना रहता है जिससे समाज पर इन बीमारियों का काफी बुरा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि इन बीमारियों के कारण लोगों की कार्यशक्ति में कमी आती है, कार्यशक्ति में कमी के कारण लोगों में आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है, जिस कारण कोई भी देश विकास के पथ से भटक सकता है।
इस योजना के माध्यम से लोगों को साफ–सफाई की जानकारी प्रदान कराना तथा लोगों से इस अभियान में स्वच्छता के लिये सहयोग प्रदान करने की अपील की गई है क्योंकि बिना जन सहयोग के इस योजना में सफलता पाना आसान नहीं है। लोगों की जागरूकता से ही हमें इस स्वच्छ भारत अभियान में सफलता मिलेगी।
इस योजना के वित्तीय प्रोत्साहन में केन्द्र व राज्य सरकार दोनों का सहयोग रखा गया है। जिसमें सभी गाँव, मोहल्लों, कस्बों तथा शहरों में नवीन शौचालय का निर्माण कराया जा सके तथा वह पिछड़े गाँव व क्षेत्र जहाँ वर्तमान समय में जो लोग बाहर शौच करने जाते हैं उनके लिये घरों में शौचालय उपलब्ध कराया जाये। इसमें मुख्य रूप से शौचालय निर्माण के लिये गरीब, महिला मुखिया व निम्न जाति के लोगों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना को सफल बनाने के लिये लोगों से एक वर्श में कम से कम 100 दिन और प्रत्येक दिन कम से कम एक घण्टा साफ–सफाई में योगदान देने की अपील की गयी है।

2. स्मार्ट विलेज एवं स्वच्छ भारत अभियान
भारत सरकार के द्वारा स्पर्श योजना के जरिए गांवों को स्मार्ट विपेज बनाने के प्लान में 300 करोड़ रूपये की बजट की व्यवस्था की और साफ–सफाई का ध्यान रखते हुए स्वच्छ शौचालय निर्माण के लिये करीब 1,546 करोड़ रूपये प्रदान किये। डा0 राममनोहर लोहिया समग्र ग्राम विकास एवं जानेश्वर मिश्र ग्राम विकास योजनाओं को जारी रखते हुए वर्श 2016–17 में 2100 नए गाँव चयनित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।
इस योजना में बहुत अधिक वित्तीय साधनों को प्रदान किया गया। खराब स्वास्थ्य, कुपोशण और गरीब से गन्दगी का सीधा सम्बन्ध है। इससे निजात पाने के लिये 02 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत मिशन को शुरू होने के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 1.50 करोड़ शौचालयों का निर्माण किया। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी 50 प्रतिशत लोग खुले में शौच जाते हैं।
इन दोनों योजनाओं को देखा जाये तो पाया गया कि यह दोनों योजनाएं लगभग एक ही समानता रखती है क्योंकि दोनों ही योजनाओं में गांवों को स्वच्छ व स्वस्थ बनाना व पूर्ण शौचालय युक्त गांवों का निर्माण करना है। ये दोनों योजनाएं भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही है। अतः कहा जा सकता है कि इन दोनों योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्ण स्वच्छता की तरफ कदम बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है।
किसी गांव को स्मार्ट तभी कहा जा सकता है जब उस गांव में शिक्षा, पानी, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को प्राप्त किया जाये। भारत सरकार हर सम्भव प्रयास करके इन योजनाओं के माध्यम से ये

सुविधाएं प्रदान करने की कोशिश कर रही है, जिससे गांवों को स्मार्ट विलेज या पूर्ण स्वच्छता युक्त घोशित किया जाये।

3. शोध पत्र के मुख्य उददेश्य

1) खुले में शौच जाने के कारणों का अध्ययन करना।
2) शौचालय निर्माण में सरकार द्वारा दिये गये वित्तीय प्रोत्साहन की निश्पादनता का अध्ययन करना।
3) स्वच्छ भारत अभियान के प्रति चलायी जा रही योजनाओं का मूल्यांकन करना।

4. साहित्य समीक्षा

वी0 शर्मा और बद्रा शैलजा (2015) के अनुसार भारत एक विकासशील देश है जो स्वच्छता की ओर केन्द्रित करने का प्रयास कर रहा है। राश्ट्र को सुव्यवस्थित करना चाहता है, और जलवायु को स्वच्छ करने के बिन्दु को व्युत्पन्न करना चाहता है। आधुनिक भारत में स्वच्छता पर अध्ययन को केन्द्रित करता है। एस0 के0 रूद्रास, एम0 सोनाली और जी0 अरूनभा (2014) के अनुसार ''स्वच्छता प्रबन्ध का सामान्य विचार इस प्रकार हो कि जिससे जल, भोजन या जनजीवन दूशित न हो, जिससे प्रतिश्ठित जीवन और स्वच्छता को प्राप्त करने में सहायता मिले।'' तिवारी सुरेन्द्र कुमार (2014) ने पाया कि जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य की सुविधा, स्कूल में एक सफल विद्यालयी वातावरण और प्रतिरोध बनाता है। साफ–सफाई से तथा स्वच्छ जल से रोगों पर नियन्त्रण पाया गया। यह स्वस्थ शारीरिक ज्ञान के वातावरण की ओर पहला कदम है, जो ज्ञान और स्वास्थ्य दोनों में लाभ पहुंचाता है।

सुब्बाराव वेन्कट पी0 और एस0 सुमाशेखर (2015) के अध्ययन में पाया मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार और साक्षरता तथा विद्यालयी शिक्षा विभाग ने स्वच्छ भारत और स्वच्छ विद्यालय द्वारा अभियान शुरू किया। जिससे शौचालय के विनिर्माण रख रखाव तथा मरम्मत के बारे में जानकारी प्रदान करने में अनेक विभाग आगे आये जिससे स्वच्छ एवं शौचालय युक्त विद्यालयों का निर्माण किया जा सके। जिससे विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन की संख्या में वृद्धि की जा सकती है, क्योंकि शौचालय न होने से विद्यालयों में बालिकाओं को अधिक समस्या उत्पन्न होती है। नायक अपर्णा (2014) के अनुसार अगले पांच वर्शों में स्वच्छ भारत लक्ष्य को पूरा करने का उद्देश्य भारत में स्वच्छता व्यवस्था में परिवर्तन लाकर उसे ठीक करना है। जो समस्याएं पर्यावरण से घनिश्ठता से जुड़ी हुई हैं, उन्हें काफी हद तक कम करना। कूड़ा–करकट का निस्तारण करना। आज भी हम जलवायु परिवर्तन, जल प्रदूशण, रासायनिकों के प्रयोग के दुश्प्रभाव का सामना करते हैं।

प्रदीप कुमार तमबोली और कुमावत आर0 एल0 (2015) के अध्ययन के अनुसार भारत की जनसंख्या 1.21 विलियन विश्व की जनसंख्या की लगभग 1/6 के बराबर है। 1980 के शुरूआत में देश में ग्रामीण स्वच्छता के लिये कवर किया क्षेत्र 1 प्रतिशत से भी कम था। 1996 में ग्रामीण स्वच्छता प्रोग्राम (ब्रैच) और 2011 के शुरूआत में भारतीय जनसंख्या के बारे में 72.2 प्रतिशत में 16.78 करोड़ गृहणियां 63800 गांवों में थी। पूर्ण स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य जनसंख्या के लिये एक सकारात्मक प्रभाव है और इन सब स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य की कमी से इसका सामाजिक तथा आर्थिक प्रभाव नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। डर्मने अभय बी0 (नबम्बर 2014) के अनुसार स्वस्थ तथा स्वास्थ्य विज्ञान अत्याधिक मानव विकास को अत्याधिक प्रभावित करते हैं। ये विकास तथा खर्च को प्रभावित करने वाले तत्व हैं, जिससे स्वच्छता से कम किया जा सकता है।

शर्मा नीतू, चौधरी रिचा और पुरोहित हर्श (2014) के अनुसार हरित लेखा अभी तक एक मुख्य मुद्दा है और हमारे देश भारत के विकास के लिये महत्वपूर्ण रूप में लिया जा सकता है। जैसे भारत के बैंकिग एवं वित्तीय संस्थान एक आवश्यक रूप में प्रारम्भ किये गये। उसी प्रकार स्वच्छता के पहलुओं को भी प्रारम्भ किया जाये। भारतीयों के विकास को बनाये रखने के लिये बैंकिग और वित्तीय संस्थान को ज्यादा काम करना होगा।

5. शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों को लिया गया है, प्राथमिक समंको को शोधकर्ता ने 50 व्यक्तियों का नमूना सर्वेक्षण भेंटवार्ता द्वारा लिया गया है एवं द्वितीयक समंकों को शोध पत्रिकाओं, किताबों एवं इलेक्ट्रानिक यन्त्रों का प्रयोग करके संग्रहित किया है, जिसमें 50 लोगों को नमूना विधि की प्रतिशत के रूप में विश्लेशण किया गया है।

6. विश्लेशण

जनपद बरेली के विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में "स्वच्छ भारत अभियान" की प्रकृति, प्रगति एवं जनस्वभाव समालोचनात्मक विश्लेशण निम्नलिखित सारणियों द्वारा दिखाया गया है। उतरसिया समुखिया ओडीएफ घोशति गांव है। यह गांव अब पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त है। इस गांव में वर्श 2005 में गिनती के 90 शौचालय ये जो कि साधन सम्पन्न लोगों ने बना लिये। इसके बाद निर्मल भारत अभियान चला जिसमें 200 शौचालयों का निर्माण 2010 तक कराया गया। इसके बाद स्वच्छ भारत अभियान के तहत कुछ शौचालयों का निर्माण कराया गया। इसके बाद 695 और शौचालयों का निर्माण जो सरकारी व स्वयं दोनों के सहयोग से बनाये गये जिससे यह गांव अब पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गया है (दैनिक जागरण 19/07/2016)।

6.1 न्यादर्श विवरण

निम्नलिखित तालिका 1 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों का न्यादर्श विवरण दिया गया है।

तालिका 1: न्यादर्श विवरण

स्त्री	**22:**	**पुरूश – 78:**	
धर्म	हिन्दू – 76:	मुस्लिम – 20:	सिख – 4:
जाति	अन्य पिछड़ा वर्ग–48:	अनुसूचित जाति – 42:	साधारण –10:

स्त्रोत: सर्वेक्षण

निम्नलिखित आकृति 1 में जनपद बरेली विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में निदर्श का समुदाय आधारित विवरण दर्शाया गया है।

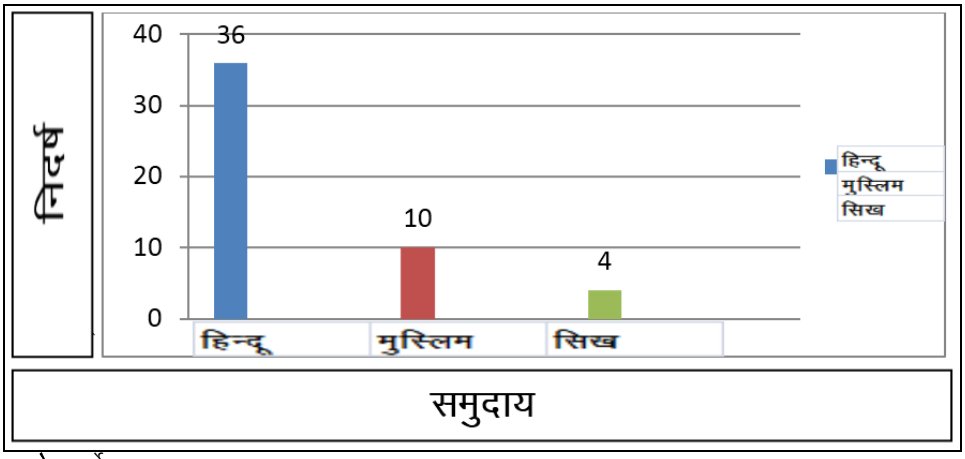

स्त्रोतः सर्वेक्षण

आकृति 1: निदर्श का समुदाय आधारित विवरण

निम्नलिखित आकृति 2 में जनपद बरेली विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में निदर्श का जातिगत एवं लिंग आधारित विवरण दर्शाया गया है।

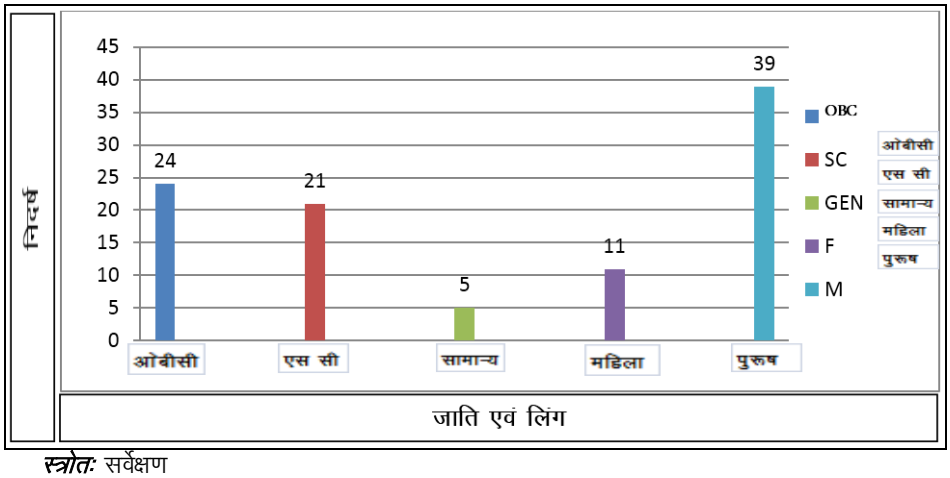

स्त्रोतः सर्वेक्षण

आकृति 2: निदर्श का जातिगत एवं लिंग आधारित विवरण

स्वच्छ भारत अभियान की जागरूकता के बारे में तथा स्वच्छता अभियान की सफलता के बारे में ज्ञात करने के लिये शोधकर्ता ने न्यादर्श में स्वयं के ब्लॉक के कुछ गाँवों में 50 व्यक्तियों से मिलकर जानकारी प्राप्त की है। इनमें से हिन्दू 76: , मुस्लिम 20: , सिख 4: हैं, जिनमें स्त्री 22: , पुरूश 78: हैं, इस सर्वेक्षण में ओबीसी के 48: अनुसूचित जाति के 42: तथा साधारण के 10: लोग हैं।

6.2 शौचालय का आकार

निम्नलिखित तालिका 2 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में शौंचालयों सम्बन्धी विवरण दर्शाया गया है।

तालिका 2: शौचालय का आकार

1.	स्वच्छता अभियान के बारे में आप क्या जानते हैं?	(क) नहीं पता – 48:	(ख) जानते हैं – 52:		
2.	क्या आपके घर में शौचालय है?	(क) हां–88:	(ख) नहीं–12:		
3.	शौचालय क्यों नहीं है?	(क) सरकारी अनुदान नहीं मिला –06:	(ख) बनवा नहीं सके – 06:	(ग) जगह नहीं – 0:	(घ) बनवाया नहीं – 0:
4.	शौचालय कहाँ है?	(क) घर में – 60:	(ख) घर से बाहर – 28:	(ग) नहीं है – 12:	
5.	शौचालय कैसा है?	(क) सरकारी – 24:	(ख) निजी –64:	(ग) नहीं–12:	
6.	शौचालय किस प्रकार का है?	(क) शोक्ते वाला – 40:	(ख) बहने वाला – 48:		
7.	क्या शौचालय चालू है?	(क) हाँ–84:	(ख) नहीं–04:	(ग) शौचालय नहीं है – 12:	
8.	शौच के लिये बाहर क्यों जाते हैं?	(क) शौचालय नहीं –12:	(ख) आदत–16:		

स्त्रोतः सर्वेक्षण

- न्यादर्श में 52: लोग स्वच्छता अभियान के बारे में जानते हैं और 48: इस अभियान के विशय में नहीं जानते हैं।
- 88: लोगों के घरों में शौचालय हैं और 12: लोग अभी शौचालय के पहुंच से बाहर हैं।
- सर्वे के द्वारा शौचालय न होने की अलग–अलग बजह पायी गयी। 6: लोगों को सरकारी अनुदान नहीं मिला, 6: लोग बनवा नहीं सके तथा 88: लोगों के घरों में शौचालय बना हुआ है।
- 60: लोगों के घर में शौचालय है और 28: लोगों के घर के बाहर शौचालय पाया गया तथा 12: के पास शौचालय नहीं है।
- लगभग 64: लोगों के शौचालय सरकारी पाये गये और 24: लोगों के निजी तथा 12: के घरों में शौचालय नहीं है।
- जिन लोगों के घरों में शौचालय है उनमें 40: शोकते वाला, 48: बहने वाला पाया गया।
- 50 लोगों के सर्वे करने पर पाया गया कि जो लोग शौच के लिये बाहर जाते हैं उनमें 12: के पास शौचालय नहीं है, 8: लोग अधिक सदस्य तथा 2: लोग आदत के कारण शौच के लिये बाहर जाते हैं।

अभी भी लगभग आधी जनसंख्या को स्वच्छता अभियान की जानकारी नहीं है। इसके लिये सरकार को विज्ञापनों या अन्य किसी माध्यम से जागरूक करना चाहिए तथा शौचालय के लाभ व बाहर शौच को जाने से
होने वाली हानियों की जानकारी देकर शौच के लिये बाहर जाने वाले को रोकने का प्रयास करना चाहिए जिससे शौचालय युक्त देश का निर्माण हो सके।

6.3 शौच सम्बन्धी आदतें एवं व्यवहार

निम्नलिखित तालिका 3 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में शौंच सम्बन्धी आदतों एवं व्यवहार सम्बन्धी विवरण को बताया गया है।

तालिका 3: शौच सम्बन्धी आदतें एवं व्यवहार

1ण	शौच किस समय जाते हैं?	क) सुबह–100:	(ख) शाम	(ग) दोपहर	(घ) दोनों समय – 25:
2ण	शौच के लिये कहाँ जाते हैं:	(क) शौचालय में–84:	(ख) बाहर–16:		
3ण	एक शौचालय को कितने व्यक्ति इस्तेमाल करते हैं?	औसतन – 6.022			
4ण	शौच हेतु चयनित स्थान की दूरी क्या है?	(क) 100 मी0 –2:	(ख) 200मी0 – 12:	(ग) 300मी0 –12:	
5ण	शौच के लिये रास्ता कैसा है?	(क) साफ – 46.153:	(ख) गन्दा –53.846:		

स्त्रोत: सर्वेक्षण

- सर्वेक्षण में लिये गये 50 लोगों के अनुसार लगभग 100: लोगों का कहना है कि शौच को सुबह जाते हैं।
- 84: लोग शौच के लिये शौचालय का इस्तेमाल करते हैं तथा 16: लोग बाहर जाते हैं।
- औसतन 6.022 लोग प्रति शौचालय का इस्तेमाल करते हैं।
- 100मी–2:, 200मी0–12:, 300मी0–12:, की दूरी पर बाहर शौच को जाते हैं।
- शौच को जाने के लिये रास्ता की जानकारी से पता चला 46. 153: रास्ता साफ तथा 53.846: रास्ता गन्दा पाया गया।

कुछ लोगों का घर से बाहर लगभग कच्चे रास्तों से होते हुएं दूर–दूर शौच के लिये जाना , उनमें शौचालय के उपयोग के अभाव को बताता है, उनमें जागरूकता लाकर शौचालय के प्रयोग को बढ़ावा देना है।

6.4 शौच एवं स्वच्छता

निम्नलिखित तालिका 4 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में शौंच एवं स्वच्छता सम्बन्धी विवरण को बताया गया है।

तालिका 4: शौच एवं स्वच्छता

1.	बाहर शौच हेतु किस पानी का प्रयोग करते हैं?	(क) डब्बे का – 22:	(ख) तालाब –02:		
2.	शौच जाने के बाद आप हाथ धोते हैं।	(क) हाँ – 100:	(ख) नहीं –0:		
3.	शौचालय की साफ–सफाई कब करते ह	(क) रोजाना – 66:	(ख) सप्ताह में – 32:	(ग) शौचालय नहीं – 12:	
4.	शौचालय की साफ–सफाई किससे करते हैं?	(क) खाली पानी से – 2:	(ख) डिटर्जेंट पाउडर –	(ग) फिनायल –58:	(घ) एसिड–24:
5.	स्वच्छता के लिये क्या आवश्यक है?	(क) सभी प्रकार की स्वच्छता–94:	(ख) शारीरिक स्वच्छता–4:	(ग) मानसिक स्वच्छता –2:	
6.	क्या आप रोज नहाते हैं?	हाँ – 100:			
7.	क्या खाना खाने से पहले हाथ धोते हैं?	हाँ – 100:			
8.	आप अपने घर की सफाई कब करते हैं?	(क) रोजाना – 90:	(ख) सप्ताह में –10:		
9.	पहने हुए कपड़े किससे धोते हैं?	डिटर्जेंट पाउडर –100:			
10.	क्या आपके घर स्नानग्रह है?	हाँ –90:	नहीं–10:		

स्त्रोत: सर्वेक्षण

- जो लोग शौच के लिये बाहर जाते हैं वे डब्बे के पानी 22: तथा तालाब का पानी–02: पानी का उपयोग करते हैं
- लगभग 100: लोग शौच के बाद हाथ धोते हैं, उसमें 94: साबुन से तथा 6: मिट्टी को हांथ धोने में इस्तेमाल करते हैं।

- 66: लोग शौचालय की साफ–सफाई रोज 32: सप्ताह में करते हैं, 12: के पास शौचालय नहीं है।
- 56: फिनायल, 24:एसिड, खाली पानी–2:, डिटर्जेंट पाउडर का 4: लोग अपने शौचालय के साफ–सफाई में प्रयोग करते हैं।
- 94: लोगों के बताने के अनुसार स्वच्छता के लिये सभी प्रकार की स्वच्छता जरूरी है तथा 4: ने शारीरिक स्वच्छता 2: ने मानसिक स्वच्छता स्वच्छता के लिये जरूरी है।
- 100: लोग रोज नहाते हैं तथा 100: अपने कपड़े डिटर्जेंट पाउडर से धोते हैं तथा 100: खाना खाने से पहले हाथ धोते हैं।
- 90: लोगों के घर स्नान गृह है तथा 10: के घर स्नान गृह नहीं है, जिनके घर स्नान गृह नहीं है वे चारपाई या टॉट से आड़ करके स्नान करते हैं।

शौच एवं जागरूकता के बारे में अधिकांश लोग जानते हैं तथा स्वच्छता उपायों का उपयोग भी करते हैं, परन्तु अभी भी लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अभाव है, जिनमें जागरूकता लाने की आवश्यकता है।

6.5 जल एवं जल निकास

निम्नलिखित तालिका 5 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में जल एवं जल निकास सम्बन्धी विवरण को बताया गया है।

तालिका 5: जल एवं जल निकास

1.	पानी का क्या साधन है?	(क) निजी नल –98:	(ख) इंडियामार्का हैंडपंप – 2:	
2.	आपके नल का पानी कहां जाता है?	(क) नाली – 80:	(ख) गढढे में –14:	(ग) खुले में –6:
3.	क्या घर के बाहर नाली है?	(क) हाँ – 86:	(ख) नहीं – 14:	
4.	नाली कैसी है?	(क) कच्ची – 60:	(ख) पक्की – 26:	(ग) नहीं– 14:
5.	क्या रास्ते के पानी का निकास है?	(क) हाँ –28:	(ख) नहीं – 72:	
6.	गाँव का रास्ता कैसा है?	(क) कच्चा – 48:	(ख) पक्का – 32:	
7.	नाली की सफाई कौन करता है?	(क) स्वयं – 64:	(ख) सफाईकर्मी – 36:	
8.	सफाईकर्मी रोज आता है?	हाँ – 14:	नहीं – 86:	

स्त्रोतः सर्वेक्षण

- 98: लोग निजी नल तथा 02: इंडिया मार्का हैंडपम्प का इस्तेमाल करते हैं।
- जिन लोगों के घर के बाहर नाली बनी हुई है उनमें से 80: लोगों के नल का पानी नाली में तथा 14: का गड्ढे में, 6: का खुले में पानी जाता है। कुछ लोग अपने नल का पानी कच्ची नाली बनाकर बाहर निकालते हैं। जिससे गन्दगी उत्पन्न होती है।
- 86: लोगों के घर के बाहर नाली है तथा 14: के घर के बाहर नाली नहीं है। नाली न होने के कारण पानी रास्ते में भर जाता है।
- गाँव से शोध अध्ययन में लिये गये 50 लोगों (100:) के अनुसार 60: लोगों के घर के बाहर कच्ची नाली है, 14: के घर के बाहर पक्की नाली बाकी 26: के घर के बाहर नाली या तो ठीक नहीं है या फिर नहीं है।
- 28: रास्ते के पानी का निकास है, 72: रास्ते के पानी का निकास सही नहीं है।
- गाँव का रास्ता 48: कच्चा 72: पक्का है, पक्के में डम्बर रोड व खड़ंजा वाला दोनों रास्ता है।
- सरकार द्वारा लगाये गये सफाईकर्मी गाँव में नाली की सफाई या रास्ते की सफाई करने नहीं आते हैं। इसमें पाया गया 14: लोगों ने बताया सफाईकर्मी आता है तथा 86: ने बताया सफाईकर्मी नहीं आता है।

अधिकांश लोगों के घरों में पानी का खुद का साधन है तथा पानी के निकास की उचित व्यवस्था भी है, लेकिन कच्चे रास्ते गांव में विकास की कमी को दर्शा रहे हैं। सफाई कर्मी रोज न आने की वजह से अधिकांश लोगों के द्वारा नालियां खुद साफ करना, ग्राम पंचायत की कमी को बताना है जिसमें सुधार की आवश्यकता है।

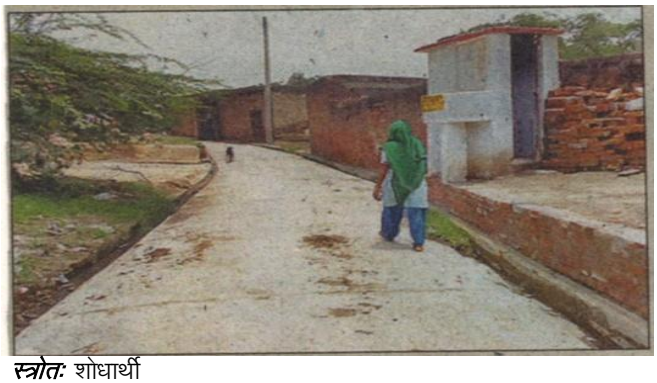

स्त्रोतः शोधार्थी

आकृति 3: निदर्श में सड़क व नाली का निर्माण

6.6 खाना बनाने के सधन

निम्नलिखित तालिका 6 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में खाना बनाने के साधनों को बताया गया है।

तालिका 6: खाना बनाने के साधन

1. क्या रसोई घर है?	हाँ –68:	नहीं – 32:	
2. खाना किस पर बनता है?	चूल्हा –60:	रसोई गैस – 32:	दोनों –18:
3. खाना कहां बनता है?	रसोई में – 68:	खुले में – 32:	

स्त्रोतः सर्वेक्षण

- गांव में 68: लोगों के घर रसोई घर है, 32: लोगों के पास रसोई घर नहीं है, जिस कारण उन्हें खुले में (बरामदे, खपड़ैल, झोपड़ी) खाना बनाना पड़ता है।
- 32: लोग रसोईगैस, 60: चूल्हा तथा 9: दोनों का इस्तेमाल खाना बनाने में करते हैं। ज्यादातर लोग चूल्हे का प्रयोग करते हैं क्योंकि गांवों में पर्याप्त ईंधन होता है।

गांव में (गरीबी) 32 प्रतिशत लोगों के पास रसोईघर नहीं है तथा अधिकांश लोग चूल्हे पर खाना पकाते हैं, इसका कारण उनके पास जगह की कमी तथा वित्तीय व्यवस्था समस्या हो सकती है। परन्तु गैस होते हुए भी चूल्हे का प्रयोग खाना बनाने के लिये करना उनकी ग्रामीण मानसिकता या पर्याप्त ईंधन (लकड़ी, कंडे आदि) हो सकता है।

6.7 घर का प्रकार

निम्नलिखित तालिका 7 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में घरों के स्वरुप को बताया गया है।

तालिका 7: घर का प्रकार

1.	घर कैसा है?	कच्चा – 8:	पक्का – 50:	मिला /जुला – 36:
2.	क्या आपके घर में बैठक है?	हाँ – 38:	नहीं – 62:	
3.	क्या आपके घर पशुशाला है?	हाँ – 44:	नहीं – 56:	

स्त्रोत: सर्वेक्षण

- 8: लोगों का घर कच्चा है और 50: लोगों का घर पक्का तथा 36: लोगों के पास मिला/जुला घर पाया गया।
- 38: घरों में बैठक है, 62: के घरों में बैठक नहीं है, मुख्य रूप से बैठक सम्पन्न परिवारों में पायी गयी है।
- आंकड़ों से ज्ञात हुआ 44: के घरों में पशुशाला है, 56: के घरों में नहीं, जिनके पास पशुशाला नहीं है वे अपने जानवरों को खुले में, बरामदे आदि में बांधते हैं।

आंकड़ों से ज्ञात होता है कि लोगों के पास घर, बैठक व पशुशाला है, परन्तु इनमें विभिन्नता पायी गयी है क्योंकि अधिकांश सम्पन्न परिवारों में तो सुविधाएं हैं परन्तु गरीब परिवारों में सुविधाओं का अभाव है।

स्त्रोत: शोधार्थी

आकृति 4: निदर्श में पशुपालन एवं शौचालय निर्माण

6.8 सरकारी क्षेत्र की भूमिका

निम्नलिखित तालिका 8 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में सरकारी क्षेत्र की भूमिका को बताया गया है।

तालिका 8: सरकारी क्षेत्र की भूमिका

1.	क्या सरकार द्वारा बनवाये शौचालय टिकाऊ हैं?	नहीं	
2.	क्या शौचालय बनवाने का काम वास्तविकता में पूरा है?	नहीं – 90:	हाँ –10:
3.	बिना रिश्वत दिये आपका काम होता है?	हाँ –4:	नहीं – 96:

स्त्रोत: सर्वेक्षण

स्त्रोतः शोधार्थी

आकृति 3: निदर्श में शौचालय का निर्माण

- भारत सरकार द्वारा एक शौचालय के लिये 9000 रूपये तथा राज्य से 3000 रू0 तक आता है, कुल 12000 रू0 आता है। शौचालय निर्माण के लिये ठेका दे दिया जाता है, ठेकेदार उपयुक्त और अच्छी क्वालिटी के सामान का प्रयोग नहीं करता, वे कम लागत से इसका निर्माण करके पैसे बचा लेते हैं, जिससे शौचालय खराब हो जाता है।
- 10ः लोगों ने शौचालय बनवाने का काम वास्तविकता में पूरा बताया, बाकी 90ः ने नहीं का जबाव दिया।
- 96ः लोगों ने कहा बिना रिश्वत के काम नहीं होता, मात्र 4ः लोगो ने बताया बिना रिश्वत के काम होता है।

सर्वेक्षण से पता चलता है कि लोगों को सरकारी योजनाओं द्वारा किये गए कार्यों की गुणवत्ता में कमी महसूस होती है।

6.9 महिलाओं की सुरक्षा एवं विकास

निम्नलिखित तालिका 9 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में महिलाओं की सुरक्षा एवं शैक्षिक सोंच को दर्शाया गया है।

तालिका 9: महिलाओं की सुरक्षा एवं विकास

1.	क्या खुले में शौच जाने से महिलाएं सुरक्षित हैं?	नहीं – 100ः	हाँ – 0ः	
2.	आप किसे ज्यादा पढ़ाना चाहते हैं?	(क) बेटा – 0ः	(ख) बेटी – 0ः	(ग) दोनों – 100ः

स्त्रोतः सर्वेक्षण

- खुले में शौच जाने से महिलाएं असुरक्षित हैं 50 लोगों के सैम्पल में 100ः का यही उत्तर पाया गया।
- अब लोगों की मानसिकता बदल गई है, 100ः लोगों का कहना है हम बेटा–बेटी दोनों को बराबर पढ़ाना चाहते हैं।

लोगों का मानना है कि खुले में शौच जाने से महिलायें असुरक्षित हैं, तथा बेटा व बेटीयों को लोग काफी समान समझने लगे हैं यह एक सही पहलू है।

6.10 परिवार का आकार

निम्नलिखित तालिका 10 में विकासखण्ड बहेड़ी के चयनित गावों में परिवार के आकार को दर्शाया गया है।

तालिका 10: परिवार का आकार

1.	परिवार में सदस्यों की संख्या	औसतन 6.022
2.	परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या	औसतन 1.34

स्त्रोतः सर्वेक्षण

- 50 सेम्पल में से परिवार के सदस्यों की औसतन संख्या–6.022 व्यक्ति हैं। जिसमें कमाने वाले सदस्यों की औसतन संख्या प्रति परिवार 1.34 पाया गयज्ञं
- परिवार में सदस्यों की संख्या औसतन 6.022 है जो अधिक मानी जाती है, और परिवार में कमाने वालों का औसत कम है।

7. प्राप्तियां

शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक आंकड़ों को एकत्रित करते समय इस अभियान की प्राप्तियों को जाना गया है शोधकर्ता ने पाया कि इसके माध्यम से लोगों की निम्नलिखित लाभ प्राप्त हो रहे हैं –

- वर्तमान समय में काफी लोगों को खुले में शौच से मुक्त करा दिया गया है, लगभग 80 से 85 : लोगों के पास शौचालय है।
- इससे उन गरीब परिवारों, महिलाओं व निम्न जाति वर्ग के लोगों को लाभ मिल रहा है, जो अपने आप से शौचालयों का निर्माण नहीं करा सकते।
- इससे गाँवों में महिलाओं की सुरक्षा की अनुभूति का भी अनुभव हो रहा है क्योंकि घर में शौचालय होने पर अब उनको अंधेरे में बाहर जाने की जरूरत नहीं है।
- पाया गया है कि अब पहले की अपेक्षा लोग बहुत कम हैजा, डायरिया या अन्य बीमारियों का शिकार हो रहे हैं।
- पहले लोग शौचालय न होने के कारण बाहर जाते थे, तो पाया जाता था कि उन्हें कुछ जंगली कीट काट लेते थे, जिससे उनकी मृत्यु तक हो जाती थी। अब शौचालयों के निर्माण से इस समस्या से मुक्ति मिल गयी है।
- सर्वेक्षण के दौरान लोगों ने बताया कि बाहर शौच के लिये दूर जाना पड़ता था जिससे काफी समय भी बरबाद होता था लेकिन अब नहीं होता।

- खुले में शौच मुक्त तथा गाँव, घर, मोहल्लों, शहरों की साफ–सफाई से लोगों के रहन–सहन में भी सुधार आया है।

8. अभियान की सीमाएं

शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण के दौरान तथा विश्लेशण के उपरान्त स्वच्छ भारत अभियान की निम्नलिखित सीमाएं देखने को मिली –

- सर्वेक्षण में पाया गया है कि अभी भी लगभग 12: लोगों के पास शौचालय नहीं है।
- लोग गरीब तथा स्वार्थी होने के कारण शौचालयों का निर्माण नहीं करा रहे हैं।
- सरकार द्वारा दिया गया अनुदान पूर्ण रूप से उपयोग में नहीं लाया जा रहा है।
- लोगों में अभी भी पुरानी रीतियों के कारण शौचालयों का निर्माण नहीं कराया जा रहा है।
- कुछ लोग ऐसे हैं शौचालय होते हुए भी बाहर शौच के लिए जाते हैं।
- परिवार में अधिक सदस्य या संयुक्त परिवार होना भी एक कमी पायी गयी है क्योंकि एक शौचालय होने के कारण शौचालय होते हुए भी बाहर जाना पड़ रहा है।
- सरकार द्वारा दिया गया शौचालय कम लागत से बनाया जाता है, जिससे वह जल्दी खराब हो जाता है।
- रिश्वतखोरी के कारण भी सभी के पास शौचालय नहीं है क्योंकि सरकारी शौचालयों के निर्माण में रिश्वत मांगी जाती है।
- खाली शौच मुक्त से ही स्वच्छता पूर्ण नहीं हो जाती है, स्वच्छता के लिये नाली, पक्की सड़क, पानी का निकास, स्वच्छ जल तथा साफ–सफाई की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे पूर्ण स्वच्छता प्राप्त की जा सके।
- जनसहयोग की कमी के कारण पूर्ण स्वच्छता को प्राप्त नहीं किया जा सकता है इसमें लोगों का कम सहयोग मिल रहा है।

9. सुझाव

1. लगभग 88: लोगों के पास शौचालय तक पहुंच है, थोड़े और प्रयास से लक्ष्य को पूर्ण किया जा सकता है। स्वच्छता के प्रति लोगों में और जागरूकता लाने की आवश्यकता है जिससे उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त कर स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाया जा सके।
2. नालियों व सड़कों के निर्माण पर भी विशेश ध्यान दिया जाये जिससे सफाई अभियान पूर्ण प्राप्त किया जा सके।
3. प्रत्येक 10 परिवारों पर एक इण्डियामार्का हैण्डपम्प, शौचालय, पीने का पानी व अन्य उपयोग के लिए होना चाहिए।
4. अनिवार्य रुप से शौचालय निर्माण व उपयोग का ऑडिट होना चाहिए।
5. सरकार द्वारा शौचालय निर्माण में वित्तीय प्रोत्साहन कम से कम इतना हो कि शौचालय अच्छा व पूर्ण बनाया जा सके। शौचालय निर्माण के लिये दिया गया अनुदान सीधे लाभार्थी के खाते में दिया जाए, जिससे उसको पूर्ण धनराशि प्राप्त हो और सही शौचालय का निर्माण किया जा सके।
6. प्रत्येक परिवार को शौचालय के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
7. स्वच्छता एक सम्पूर्ण कार्य है सामाजिक एवं संस्थागत के उच्च मानकों को प्राप्त करना अति आवश्यक है।
8. स्रकारी कार्यों को बिना पक्षपात व बिना रिश्वत के किया जाना चाहिए।

10. निश्कर्श

सर्वेक्षण के अनुसार अभी भी 12: लोगों के पास शौचालय नहीं है तथा 88: के पास शौचालय है इसमें 16: लोग इसका उपयोग नहीं करते हैं तथा 84: लोग उपयोग करते हैं, शौचालयों में अभी 04: शौचालय चालू नहीं हैं। 96: लोगों का कहना है कि बिना रिश्वत के काम नहीं होता मात्र 04: लोगों ने कहा कि बिना रिश्वत के काम होता है। ये 04: वे लोग हैं जो सम्पन्न परिवार, प्रधान या अन्य सत्ताधरी लोग हैं। अभी भी गांव के रास्ते, मकान, पशुपालन, रसोईघर, नाली तथा पानी की समस्या बनी हुई इसका मुख्य कारण है सरकार द्वारा दिए गए अनुदान का बन्दरबांट हो जाना तथा लोगों की गरीबी व जागरुकता का अभाव। सरकार को इन कमियों को दूर करके इस अभियान को सफल बना सकती है।

"स्वच्छ भारत अभियान" भारत सरकार की एक बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है जो कि सम्पूर्ण देश में चलाई जा रही है। यह योजना मुख्य रूप से खुले में शौच से मुक्ति प्रदान कराने के लिये तथा साफ–सफाई को पूर्ण कराने के लिये चलायी जा रही है। जिससे बीमारियों का कम उदय होगा और लोगों के स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। लेकिन इसके कार्यान्वय में कमी होने की बजह से यह अपने सभी उद्देश्य को पूर्णतः पाने में असमर्थ हो रही है।

11. सन्दर्भ सूची

1. Aparna Nayak. Clean India. Journal of Geoscience and Environment Protection. 2015; 3:133-139. doi: 10.4236/gep. 2015. 35015. http://creativecommous.org/ licenses/ by/4.0/28 July 2015.
2. Mane Abhay B. Swachh Bharat Mission for India's Sanitation Problem: Need of the Hour, Uniqe Journal of Medical and Dental Sciences, ISSN 2347-5579, Mane Abhay UJMDS. 2014; 2(04):58-60. www.ujconline.net
3. Neetu Sharma, Richa Chaudhary, Harsh Purohit. A Comparative Study on Green Initiatives Taken by Selected Public and Private Sector Banks in Mumbai ISOR Journal of Business and Management (IOSR-JBM). 2014, 32-37. e-ISSN : 2278-4878, -2319-7678. www.josrjournals.org
4. Venkata Subbarao P, Somasekhar S. Swachh Bharat : Some Issues and Concern, International Journal of Academic Research. 2015; 4(4):2. ISSN 2348-7666 October-December 2015, http://ijar.org.in
5. Pradeep Kumar Tamboli, Kumawat RL. Role of Corporate Social Responsibility (CSR) in Swachh Bharat Abhiyan, ASM International E-Journal ongoing Research in Management and IT. 2005, 190. E ISSN-2320-0065, http://www.asme_Journal.com
6. Rudresh Kumar Sugam, Sonali Mittra, Arunabha Ghosh, Kachra Mukt, Shouchalaya Yukt Bharat, Council on Energy, Environment and Water. 2014, 584. http://ceew.in
7. Sharma V, Badra Shailja. International Journal of Advance Research in Science and Engineering (IJARSE). 2015; 4(01). ISSN – 2319-8354 (E), http://www.IJARSE.com.
8. Surendra Kumar Tiwari. The Study of Awareness of A National Mission: Swach Vidyalaya in the Middle School Student of Private and Public Schools, PARIPEX-Indian Journal of Research. 2014; 3-12. ISSN 2250-1991. www.paripex.in, http://indianjournalresearch.com